मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 59, अप्रैल(द्वितीय), 2019

गांधीजी महान थे परंतु सत्य उनसे भी महान!

लेखक: पद्मश्री डॉ. गुणवंतभाई शाह
अनुवादक: डॉ. रजनीकान्त एस.शाह

गांधीजी भी मनुष्य थे और उनका मनुष्यत्व छिनकर और उनके शब्दों का आधार लेकर अपनी बात को सिद्ध करना ज्यादा ठीक नहीं है। शाश्वत गांधी और अशाश्वत गांधी के बीच रहे भेद को समझना पड़ेगा।

ग्रीस में प्लेटो के अवसान के बाद एथेंस में एरिस्टोटल अकादमी की व्यवस्था को देखते थे। प्लेटो ने अकादमी के प्रवेशद्वार पर सूचना रखी थी: `जिन्हें भूमिति में रस-रुचि नहीं हो ऐसे व्यक्ति इस परिसर में प्रवेश करें नहीं।' अब हमारी यूनिवर्सिटी के प्रवेशद्वार पर सूचना रखनी चाहिए: `जिन्हें विद्याप्राप्ति में रस-रुचि नहीं हो,उन्हें इस कैंपस पर प्रविष्ट होने की गुस्ताखी करनी नहीं है।' -ऐसे मिजाज के साथ आजके इस लिटररी फेस्टिवल में अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ। उम्रह पर पहुंचा हूँ और तबियत भी केयूसीएचएच नासाज़ है परंतु अभी भी विचारशक्ति साबुत है।

प्लेटो के अवसान के बाद अकादमी का कारबार महान विचारक और ग्रेट सिकंदर के गुरु ऐसे एरिस्टोटल देखते थे। एरिस्टोटल आज के हमारे वाइस चांसेलर्स जैसा नहीं था। वह रोज कक्षा में पढाता भी था। वह जब कक्षा में पढ़ा रहा था तब एक विद्यार्थी ने खड़े होकर कहा: `एरिस्टोटल ! आप अभी ऐसा कहते हैं परंतु प्लेटो तो कुछ अलग कहते थे।' शिक्षक एरिस्टोटल मौन रहे और उन्होंने आगे पढाना जारी रखा। वह विद्यार्थी शांत नहीं रहा। उसने तीन बार एरिस्टोटल को रोककर कहा: `सर! आप ऐसा कहते हो पर प्लेटो तो अलग ही कहते थे।' आखिरकार एरिस्टोटल ने उस विद्यार्थी को स्पष्ट बात कह ही दी: `माय यंग फ्रेंड! प्लेटो वोज ग्रेट बट ट्रुथ इज ग्रेटर! आज के मेरे प्रवचन का यही मिजाज है।`गांधीजी महान थे परंतु सत्य तो उनसे भी महान कहा जाएगा।' गांधीजी जो कहे, उसे आखिरी सत्य मानना तो गांधीजी को भी मंजूर नहीं था।

हमारी एक बुरी आदत हो गई है। हर बात में गांधीजी को उद्धृत करके सामनेवाले को शांत कर देने का फैशन छोडने जैसा है। गांधीजी भी मनुष्य थे और उनका मनुष्यत्व छिनकर और उनके शब्दों का आधार लेकर अपनी बात को सिद्ध करना ज्यादा ठीक नहीं है। शाश्वत गांधी और अशाश्वत गांधी के बीच रहे भेद को समझना पड़ेगा। सत्य,अहिंसा,साधनशुद्धि और सादगी शाश्वत और गांधी के महान लक्षण थे। कताई मशीन (रेंटियो) को शाश्वत नहीं माना जा सकता। 1500 वर्ष के बाद वह शायद साबरमती आश्रम में भी देखने को नहीं मिलेगा! खादी नहीं पहननेवाला,शराब पीनेवाला और सादगी से नहीं रहनेवाला मनुष्य भी महान हो सकता है। जिस प्रकार बाह्याचार धर्म में अवरोधक बनते हैं,उसी प्रकार गांधीविचार को भी परेशान कर सकता है। मूल बात तो शाश्वत गांधी को समझने की है।

कुछ दिन पूर्व राजकोट से मुझे श्री देवेन्द्र देसाई मिलने के लिए आए। वे खादी ग्रामोद्योग कमीशन के पूर्व अध्यक्ष थे। वे `सर्वोदय समाज' नामक पत्रिका भी चलाते हैं। उन्होंने मुझसे बिनती की: `गांधीजी द्वारा प्रबोधित ग्यारह व्रतों पर हमारी पत्रिका को यदि आप ग्यारह लेखों की लेखमाला दे सकते हैं तो मुझे आनंद होगा।' मैंने जवाब में कहा: `मैं यह नहीं लिख सकता क्योंकि उन व्रतों से मैं सहमत नहीं हूँ। गांधीजी द्वारा प्रबोधित ब्रह्मचर्य,अस्वादव्रत और अपरिग्रह जैसे व्रत के साथ असहमत हूँ तो मैं कैसे लिख सकता हूँ? बात वहाँ खत्म हुई।

गांधीजी महात्मा थे। मैं अपनी विचारशक्ति को किसी भी महान मानव के पास गिरवी रखना चाहता नहीं हूँ। गांधीजी के चरणों में भी नहीं! अप्रामाणिक सहमति से प्रामाणिक असहमति गांधीजी को अवश्य अच्छी लगेगी, यह बात निश्चित है। गाँधीवादियों को यह बात समझाये कौन? मेरी तो दृढ़ मान्यता है,कि नयी पीढ़ी हमारी पुरानी पीढ़ी की अपेक्षा महात्माजी के ज्यादा नजदीक है। क्या वजह? क्योंकि नयी पीढ़ी दंभी नहीं है। आज का युवा अपने पिता से कह सकता है: `डेड! यह तृप्ति मेरी गर्लफ्रेंड है।' बस,नयी पीढ़ी की ऐसी निखालिसता गांधीजी को अवश्य भाएगी। जहां दंभ है वहाँ सत्य नहीं होता।

माइकल कोरदा का उपन्यास `Worldly Goods' हिटलर के जीवन पर आधारित है। उसमें हिटलर को शाकाहारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उस उपन्यास में एक पत्र के मुख से दो विधान प्रकट हुए हैं।

1.बैर की बानगी ठंडी हो जाए उसके बाद ही खाना बेहतर।

2.सुंदर ढंग से जीना चाहिए,बैर लेने का यह उत्तम उपाय है।

इन विधानों में उपनिषदीय मंत्र की ऊंचाई दृष्टिगोचर होती है। इन दोनों विधानों में मुझे बुद्ध,महावीर,ईसु,मोहम्मद और गांधी के विचारों का प्रतिघोष सुनाई देता है। आनेवाली सदियों में गांधीजी अनोखे रूपों में प्रकट होते ही रहनेवाले हैं। उनको म्यूजियम में बंद कर देना उचित नहीं है। यह हैं शाश्वत गांधी।

गांधीजी द्वारा प्रबोधित ब्रह्मचर्य व्रत के साथ क्या मैं बिना दंभ किए सहमत हो सकता हूँ? क्या किसी आश्रम का अधिपति इस व्रत का पालन परिशुद्ध सत्य को सम्हालकर कर सकता है?(ख़ानगी में) मात्र उसे ही खबर होती है,कि उसका पाजामा कहाँ कहाँ हो आया!!! कविवर धूमिलजी की पंक्तियाँ याद हैं? सुनिए:

``हरेक ईमान को
एक चोर दरवाजा होता है,
जो संडास की बगल में खुलता है!''

ज्यादा क्या कहें? फिनिक्स आश्रम में खिले हुए एक लवफ़ेयर की बात विद्वान रामचन्द्र गुहा ने कही है। प्राणजीवन मेहता गांधीजी के शुरुआती दौर के चुस्त समर्थक थे। उनकी पुत्री जयकुंवर सुंदर और रोमांटिक थी। उसकी शादी डॉ.मणिलाल के साथ हुई थी। एकबार पति मोरेशियस गए तब जयकुँवर(जेकी) को गांधीपुत्र मणिलाल से प्रेम हो गया। इसमें कस्तूरबा को सारा दोष जेकी में देखा। गांधीजी ने खुलापन दिखाया तो पतिपत्नी के बीच ठन गई।(मात्र हमारे ही घरों में ऐसा होता है,यह बात गलत है) एकबार मणिलाल के अतिरिक्त अन्य पुरुष से छेडछाड़ करती हुई जेकी पकड़ी गई। गांधीजी ने दो सप्ताह के लिए अनशन करने का निर्णय किया। जेकी को भारी पछतावा हुआ। 1912 के वर्ष में एक पत्र लिखकर पुत्र मणिलाल ने गांधीबापू से क्षमायाचना की। गांधीजी ने मणिलाल को तार भेजा। तार के शब्द थे `Do`t ask me to forgive you,Ask God to forgive you. तत्पश्चात् जेकी ने तीन प्रतिज्ञाएँ ली थी। 1.वह जीवन पर्यंत श्वेत वस्त्र ही पहनेगी. 2. वह जीवन पर्यंत नमक नहीं खायेगी. 3. वह अपने बाल कटवा देगी। मुझे ये तीन प्रतिज्ञाएँ अनावश्यक लगती हैं। यह बात यहाँ अप्रस्तुत है।

गांधीजी को दंभ जरा भी मंजूर नहीं था। सत्य के लिए ऐसी `चिकनी दरकार' रखनेवाला अन्य कोई अवतार पृथ्वी पर क्या हुआ होगा? आइन्स्टाइन की बात सच थी: `आनेवाली पीढ़ियाँ मानेंगी नहीं कि ऐसा कोई महामानव पृथ्वी पर चला था।'

(तारीख 18 जनवरी 2018 के दिन एलेम्बिक के सहयोग से वडोदरा में योजित गुजराती लिटरेचर फेस्टिवल (GLF) में श्री सौम्य जोशी के साथ `गांधी-150 वें वर्ष में' पर योजित संवाद में प्रकट हुए मेरे विचारों का होमवर्क।)*

परिणाम

गांधीजी जिस स्थान पर जाते थे
वह स्थान तीर्थ बन जाता।
गांधीजी जहाँ रहते थे वह स्थान
मंदिर बन जाता था!

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें